Notes on some Prakrit words

H C Bhayani

Pk तुप्प 'besmeared', 'ghee', चुप्प 'greasy'

1. Under 'Deśīnamālā' 5.22 Hemacandra has noted Pk. तुप्प for which he has given, besides others, two meaning - equivalents in Sk.: म्रक्षित 'besmeared' and स्निग्ध 'greasy'.

In Hāla's Gāhākosa तुप्प occurs thrice. In verse no. 22 in the compound expression वण्ण-घिअ-तुप्प-मुहिएँ for which there is a variant reading वण्ण-घिअ-लित्त-मुहिए. In verse no. 520 also we have वण्ण-घिअ-तुप्प-मुहि. In verse no. 289 occurs तुप्पाणणा which is rendered by a commentator as घृतलिप्साननना. In Bhuvanapāla's recension we have तुप्पालया for तुप्पाणणा, rendered as घृतलिप्तालका in the commentary.

In the Jain Āgama 'Daśāśrutaskandha' (8122) occurs तुप्पग्ग 'whose ends are bemeared with oil.'

In Hemacandra's Siddhahema grammar अंकोल्ल-तेल्ल-तुप्पं 'bemeared with the oil of Aṅkoṣṭha' is cited in the commentary on 8-1-200.

In the 'Deśi Śabda Kośa' तुप्पित = म्रक्षित from 'Anuyogadvāra-cūrṇi' and तुप्पिय = स्निग्ध from 'Vipākas'ruta' are noted.

In the 'Gāhākosa' occurs the denominative तुप्पइय (with variants तुप्पविअ, तुप्पलिअ) 'besmeared with ghee' in verse 529.

In 'Setubandha' (15,38) तुप्प is used in the sense of 'ghee'. Past passive participle उत्तुप्पिय 'besmeared' of the verb formed from तुप्प occurs in Jain Āgamika texts. For example : सेद-आयत-णेहुत्तुप्पिय-किलिन्न-गत्त ('Praśnavyaāṅkaraṇa', chapter 3, in the description of thieves) 'having limbs drenched and besmeared with oil emitted from perspiration'. With उत्तुप्पिय we

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

can compare उद्धूलिय (from धूली), उद्धूविय (from धूव) etc. See Bhayani, Some Aspects of Deśya Prakrit, 1992, pp. 72, 77. For NIA derivatives from तुप्प see CDIAL 5864.

2. Under 'Deśināmamālā' 3,15 चुप्प is noted with the meaning स्निग्ध 'greasy'. At 'Siddhahema' 8,1 the verb चोप्पड् is noted as synonymous with Sk.म्रक्ष् . चोप्पडिय etc. occur frequently in Prakrit literature in the sense of 'besmeared with grease'. For NIA derivatives see CDIAL 4865 (चुप्प / चोप्प). चोपड occurs in the sense of 'a greasy substance like oil, ghee etc.' in NIA languages.

3. From Sk. म्रक्ष् , Pk. मक्ख् 'to besmear' is derived H. मक्खन, G. माखण 'butter' etc. See CDIAL 10378.

4. If like चोप्पड् and म्रक्ष् we take तुप्प् as primarily meaning 'to besmear', then तुप्प and तुप्पिय 'besmeared' can be regarded as formed like फुट्ट and फुट्टिय, तुट्ट and तुट्टिय etc. and तुप्पव् from तुप्प as a denominative with तुप्पविअ as past passive participle. Later semantic development as 'besmearing', 'grease', 'ghee' can account for तुप्प / तूप 'ghee'. Turner indicates that तुप्प and चुप्प are related. In a few Prakrit words we find palatal consonants (*c*, *j*) taking the place of dentals (*t*, *d*) or conversely *t* for *c* and *d* for *j*. See Pischel's Comparative Grammar of Prakrit Languages, 215, 216. We can compare चिट्ठइ and तिष्ठति, चुच्छ and तुच्छ with चुप्प and तुप्प . Or alternatively regard चुप्प as prior.

---

* The present discussion of तुप्प is a considerably expanded version of a short note on उत्तुप्पिय that was included in my paper 'तीन अर्धमागधी शब्दों की कथा' in 'Muni Sri Hajarimal Smrti-Grantha', 1965, pp. 771-772 ; reprinted in my collection 'Studies in Des'ya Prakrit', 1988, pp. 192-194.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In veiw of the variant घिअ-लित्त for घिअ-तुप्प and the citation अंकोल्ल-तेल्ल-तुप्प in the 'Siddhahema', I find untenable Tieken's view that in verse 20 तुप्प means धृत (i.e. घिअ-तुप्प is a compound of two synonyms) and that the meaning म्रक्षित is based on a misunderstanding (Herman Tieken, 'Hāla's Sattasaī as a source of pseudo-Deśī words', Bulletin D'etudes Indiennes, 10, 1992. p. 235).

Pk. परिकट्टलिय

In PSM. this word is noted from Piṇḍanirsyukti 239 with the sense 'एकत्र पिण्डीकृत'. But Bollée has referred to परिकट्टुलिय (should it be originally परिकड्ढिल्लिय ?) from Ratnacandra's dictionary and has pointed to the occurrence of परिपिण्डिय in the same sense (p. 466, 495). So परिकट्टलिय is a wrong from. It derives from Sk. परिकृष्ट, Pk. परिकड्ढ .

Reference Works

Materials for an edition and study of the Piṃḍa and Ohanijjuttis of the Śvetambarā Jain Tradition. Vol II text and glossary. Willem B. Bollée. 1994.
Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages. R. L. Turner.
Pāiasaddamahaṇṇavo. H. Sheth.
Deśī Śabdakośa . Dulaharaja.

Abbreviations

CDIAL - Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages.
DS. - Deśī Śabdakośa
ON. - Oghanijjutti
PM. - Pīṁḍanijjutti
PSM. - Pāiasaddamahaṇṇavo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संशोधन-समाचार : मेरुतुंग-बालावबोध-व्याकरण

नारायण म. कंसारा

वि.सं. १४०३ थी १४७१ दरमियान हयाति धरावी गयेल अंचलगच्छीय आचार्यश्रीमेरुतुंगसूरि एक बहुश्रुत विद्वान अने ग्रंथकार हता. एमणे कामदेवचरित्र, संभवनाथचरित्र, जैनमेघदूत, षड्दर्शननिर्णय, जेसाजीप्रबंध, नाभिवंशमहाकाव्य वगेरे त्रीसेक ग्रंथो रच्या छे. एमांनो एक ग्रंथ 'मेरुतुंग-बालावबोध-व्याकरण' छे.

आ ग्रंथना संपादननी कामगिरी बे एक वर्ष पूर्वे अंचलगच्छीय आचार्य श्री कलाप्रभसूरिजी द्वारा मने सोंपवामां आवी हती. 'बुद्धिसागरव्याकरण'ना कार्यमां वच्चे थोडोक अवकाश मळ्यो त्यारे तेनी साथे साथे आ कार्य आरंभीने ए १९९६ना डीसेम्बरमां पूर्ण थयेलुं. अत्यारे ए ग्रंथनुं छपाइकाम चालु छे अने छ एक मासमां प्रसिद्ध थशे. आ बधी कामगिरीनुं संचालन आचार्यश्री द्वारा थइ रह्युं छे.

'मेरुतुंगव्याकरण' विषे 'संस्कृत व्याकरण शास्त्र'ना इतिहासोमां खास कोई माहिती मळती नथी. एनुं कारण ए छे के आ व्याकरण मूळे 'कातंत्रवृत्ति'ना स्वरूपनुं छे, तेथी ए कोई स्वतंत्र व्याकरण होवानुं प्रसिद्ध नथी. तेनी जे चार हस्तप्रतो मळी छे तेमां 'बालवबोधवृत्ति' , 'कृत्सूत्रवृत्ति-बालावबोध', 'कातंत्र बालबोधवृत्ति' अने 'कातंत्र व्याकरण बालबोधवृत्ति सह' आवां ज ग्रंथ नामो छे.

आचार्य मेरुतुंगसूरिए पोते पण कोई स्वतंत्र रचना कर्यानो दावो कर्यो नथी. उलटुं एमणे तो ग्रंथना आरंभे बीजा मंगलश्लोकमां ज त्रीजा-चोथा चरणोमां "कातन्त्रस्य प्रवक्ष्यामि व्याख्यानं शार्ववर्मिकम् ॥ २ ॥" एम कही दीधुं छे. आ उपरथी जणाय छे के आ ग्रंथ रचना पाछळ एमनो उद्देश पोताना शिष्यसमूहने सरळताथी संस्कृतना जाणकार बनाववानो अने - 'बालावबोध'नो ज हतो.

छतां 'मेरुतुंग बालवबोध-व्याकरण' ए स्वतंत्र ग्रंथ गणावववानी पात्रता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरावे छे कारण के आचार्यश्रीए पोताना जमानामां पोताना विहारक्षेत्र मारवाडमां प्रचलित कातंत्र व्याकरण तथा तेना उपरनी दुर्गवृत्ति तथा सिद्धहैमशब्दानुशासनना पांचमा अध्यायनां अमुक चूंटेलां सूत्रो तथा तेमना उपरनी बृहद्वृत्तिनो उपयोग करीने पोतानी शार्ववर्मिक कातंत्रनी 'बालावबोधवृत्ति' तथा आचार्य हेमचंद्रसूरिना अमुक पसंद करेलां सूत्रोमां अनुवृत्तिनी आवश्यकता मुजब जरूरी फेरफार करीने नवेसरथी पोतानां कृत्सूत्रो मठारी तथा तेना उपर पण बालावबोध स्वरूपनी वृत्तिनी रचना करीने पोताना आ 'मेरुतुंग-बालावबोध-व्याकरण' तरीके ओळखावा लायक व्याकरणग्रंथनी रचना करी छे. आ ग्रंथमां कुल मळीने १०७१ सूत्रो छे अने तेना उपर आचार्यनी 'बालवबोधवृत्ति' छे. आ सूत्रो चार अध्यायमां वहेंचायेलां छे अने दरेक अध्याय अमुक संख्याना पादोमां वहेंचायेलो छे. पाद संख्या चार ज होय तेवो नियम अहीं नथी. प्रथम अध्यायमां पांच पाद, बीजामां छ पाद, त्रीजामां आठ पाद अने चोथामां छ पाद छे. ए रीते आ 'मेरुतुंग-बालावबोध-व्याकरण' चतुरध्यायी के पच्चीसपादी व्याकरण ग्रंथ छे.

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org